माँ,

तुम्हारा जन्मदिन है , कैसे कहुँ कि तुम नही हो..! जो नही होते, उनका अहसास भी तो नही होता। जब मेरा जीवन तुम्हारे अहसास से भरा पड़ा है, कैसे कह दूँ कि, तुम नही हो माँ..! मेरे साँस की हर बयार और हर निवाले में तुम हो माँ..!

हर पल दीखती हो माँ,

हर बयार में महकती हो माँ,

तुम्हारे पौधे आज वृक्ष हो गए,

कभी तो छाया में बैठो न माँ..!!

एक बात पूछूँ..? क्या तुम्हे ऐसा नही लगता कि, तुम थोड़ी जल्दी में चले गए..! मुझे मालूम है, तुम्हे भी जाने की जल्दी नही होगी। पर शायद, किसी बड़े सौभाग्य को हम तक भेजने के लिए तुम्हे जाना पड़ा होगा। ईश्वर भी तो सौदागर है, कुछ लेकर ही तो कुछ देता भी है..!

किसी ने कहा था,

तुम होती तो ऐसा होता, तुम होती तो वैसा होता..!

मैं कहता हूँ,

तुम होती तो ऐसा नही होता, तुम होती तो वैसा नही होता..!

तुम्हारे लगाये बगिया के फूल भी पुकारते है, तुम्हे।

खोजते है, तुम्हे।

अब तो कुम्हलाने भी लगे है।

शब्द टूट रहे है, माँ..!

भावनाएँ बिलख रही है, माँ..!

मन ओझल सा लगता है, माँ..!

तुम बिन बिखर चूका हूँ, माँ..!

जहाँ भी हो, अपना ख्याल रखना।

तुम्हारी बहु और दोनों पोते भी तुम्हे प्रणाम भेज रहे है..!!

नमन, माँ नमन...🙏🙏🙏